Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. 16, Issue No. 4, March-2019, ISSN 2230-7540

मेवात अंचल का सांस्कृतिक परिदृश्य

Nishim Nagar*

M.A. (Hindi) JRF, NET (Hindi) D.ed., Sirsa

सार – ***हरियाणा, राजस्थान और उत्तरप्रदेश की सीमाओं का संस्पर्श करते हुए विशिष्ट अंचल है, जिसे 'मेवात' कहा जाता है। विद्वानों का मत है कि इस अंचल में बसने वाली 'मेव' जाति के नाम पर इस अंचल का नाम 'मेवात' पड़ा। सुप्रसिद्ध इतिहासकार डॉ. कृपाल चन्द्र यादव ने 'मेवात' शब्द की उत्पत्ति 'मत्स्य प्रदेश' से मानी है। उनका मत है कि प्राचीनकाल में और बौद्धकाल में तथा उसके बाद भी लगभग सारे का सारा यह प्रदेश जो अब 'मेवात' कहलाता है, 'मत्स्य प्रदेश' कहलाता था। अब यह सिद्ध हो जाता है कि 'मत्स्य' से ही 'मेवात' शब्द बना है।1***

----------X----------

'मेवात' के साहित्यकार 'सिद्दीक अहमद मेव' का मत है कि ''मेवात एक ऐसा क्षेत्र है, जिसकी सीमाएँ कभी भी निश्चित तौर पर कायम नहीं की गई। 'मेवात' की सीमाएँ समय-समय पर बदलती रही हैं। वर्तमान में मेवात क्षेत्र दिल्ली के दक्षिण में स्थित है। हरियाणा के जिला गुडगाँव की तहसील नूह, फिरोजपुर फिरका व पुन्हाना, जिला फरीदाबाद की तहसील हथीन व पलवल का कुछ भाग, राजस्थान के जिला अलवर की तहसील अलवर, तिजारा, रामगढ़, किशनगढ़, लक्ष्मण गढ़ व गोविन्दगढ़ तथा जिला भरतपुर की तहसील पहाड़ी, कामा, डीग एवं नगर मेवात क्षेत्र का भाग हैं। इसके अतिरिक्त उत्तरप्रदेश के जिला मथुरा की तहसील कोसी व छाता भी मेवात क्षेत्र के अंतर्गत ही आते हैं। मोटे तौर पर सम्पूर्ण मेवात क्षेत्र उत्तर से दक्षिण तक लगभग 80 मील लम्बा तथा पूर्व से पश्चिम तक लगभग 75 मील चैड़ा है।''2

''महाभारत काल में यह सम्पूर्ण क्षेत्र मत्स्य प्रदेश कहलाता था। मत्स्य प्रदेश के अतिरिक्त विराट नगर तथा इन्द्रप्रस्थ में भी मेवों की काफी आबादियाँ थीं।.... सम्पूर्ण मेवात क्षेत्र अरावली पर्वत शृंखलाओं से घिरा हुआ है। अरावली पर्वत मेवात को प्राकृतिक तौर से तीन भागों में बाँटता है- 1. पहाड़ ऊपर, 2. आबरेज, 3. भयाना। अरावली पर्वत का पश्चिमी क्षेत्र, जिसमें तावडू, तिजारा, टपूकड़ा व किशनगढ़ आदि आते हैं, 'पहाड़ ऊपर' कहलाता है, जबकि अरावली के पूर्व में दो पहाड़ों के बीच का भाग, फिरोजपुर झिरका से सोहना तक का क्षेत्र आबरेज (आरेज) कहलाता है। आबरेज के पूर्वी क्षेत्र को, जिसमें पिनगाँवा, पुन्हाना, बिछौर, होडल आदि शामिल हैं। 'भयाना' कहलाता है।''3

मेवात में रहने वाला प्रत्येक व्यक्ति बिना किसी जाति, धर्म अथवा रंग भेद के 'मेवाती' के कहलाता है। इसी प्रकार मेवातियों की भाषा का नाम भी मेवाती है। वस्तुतः 'मेवात' शूरवीरों, शायरों तथा साहसी लोगों का प्रदेश है। हसन खाँ मेवात के गौरव हैं। किसी शायर ने 'मेवात' की प्रशंसा करते हुए लिखा है-

निपजा जोधा मरखना, एक बात सौ बात की।

दिल्ली काँधे ढाल की, घींग धरा मेवात की।।

यों तो प्रत्येक समुदाय की अपनी-अपनी विशेषताएँ होती हैं, लेकिन मेव समुदाय की अपनी कुछ महत्त्वपूर्ण सामाजिक परम्पराएँ एवं विशिष्टताएँ हैं। इस समुदाय की सामाजिक संरचना व संस्कृति में हिन्दू-मुस्लिम परम्पराओं का एक विशिष्ट समन्वय दिखाई पड़ता है। मेव समुदाय की सामाजिक संरचना बड़ी रोचक है। इनके उपविभागों एवं गोत्रों का विवरण इस प्रकार है-

(क) **उपविभाग:** 1. चिरकलोत 2. टैमटोत 3. दूलोत 4. नाई, 5. मूंदलोत, 6. घासेडिया, 7. डेबाल, 8. लूंडावत बागोरिया, 9. रटावत, 10. बालौत, 11. गौखाल, 12. सेंगल, 13. पाहट।

उक्त उपविभागों में से पहले बारह को 'पाल' और तेरहवें उपविभाग को 'पलाकड़ा' कहते हैं।

(ख) **गोत्र:** मेव कौम 52 गोत्रों में बांटी हुई है। यथा- गोरवाल, गेवाल, खड़न्नाई, बडनाई, बागला,

www.ignited.in

छाजलिया, नांगलोट, संगता, मुच्छाल, खूरकटिया, भरकरिया, भावला, बेसर, भमनावट, मोटिया, बीगोत, लमखारा, पनोरा, घासेडिया, लूका, सरघीया, मंगरिया, बलियान, कटारिया, सोखेड़ा, गोंछा, बोंडिया, गोमनिया, डोबाल, पालावत, सगड़ावत, मकड़ावत, कंगार, जटलावत, झलानिया, छोकर, मोर, जंगल, गोमाल, सोंगल, मछलावत, खेलदार, कावलिया आदि। उक्त गोत्रों के अतिरिक्त नौ गोत्र अज्ञात हैं।

मेव समुदाय में उपर्युक्त पालों और गोत्रों की व्यवस्था का बहुत महत्त्व है। वैवाहिक सम्बन्ध स्थापित करे समय मेव-समुदाय में इनका पूरा-पूरा ध्यान रखा जाता है। मेव समुदाय अन्तर्विवाही हैं अर्थात् मेव लोग अपने ही पालों में विवाह करते हैं। मेव समुदाय में नातेदारी संबोधन हिन्दुओं की भाँति ही हैं। मेवों में प्रमुख नातेदारियों के संबोधन इस प्रकार हैं-

मेहरी (पत्नी), भान (बहिन), भाई, बाप, माँ, बड़ा बाप, ताऊ, बहनोई, भानजा, भानजी, भतीजा, भतीजी, बेटा, बेटी, साला, सलज, साली, साढू, फूलों, बुआ, फूका, जवाईं, घणी-पति, बीरा, भाई, ननद, बड़ा-जेठ, बड़ी-जिठाणी, लाला-देवर, छोटी-दोराणी, ससुरो, बुआ, सास, नन्दोई-पति की बहन का पति, भौजाई आदि।

उक्त विवरण से स्पष्ट है कि सभी नातेदारी संबोधन, हिन्दुओं की ही भाँति हैं, किन्तु मेहरी, यान, वीर, फूकी आदि संबोधन हिन्दुओं से भिन्न हैं। उक्त नातेदारी संबोधनों से हिन्दू-मुस्लिम समन्वय की झलक मिलती हैं। मेवात में संयुक्त परिवार प्रणाली के दर्शन होते हैं। लेकिन आजकल इस प्रणाली में विघटन की प्रक्रिया प्रारंभ हो गई है।

मुस्लिम धर्म के अनुसार प्रत्येक मेव को मुसलमानी फरवाना आवश्यक होता है। मेवों में यह प्रथा है कि सूक खूंटे (घर) पर दो लड़कों की ही मुसलमानी हो सकती है तथा उसके बाद लड़कों को मुसलमानी अपने मामा के घर होती है। मुसलमानी करने का काम नाई करता है। जिस लड़के की मुसलमानी की जाती है, उसको परिवार या जाति-बिरादरी वाले लोगों के सामने लाया जाता है। नाई उन सबके सामने अपने तेज उस्तरे या कैंची से बालक के शिरन (लिंग) के अगले भाग की अनावश्यक खाल को काट देता है। इस अवसर पर जाति, बिरादरी के लोगों को मिठाइयाँ अथवा मीठे चावल बांटे जाते हैं।

'मेवात अंचल' के कुछ लोकविश्वास भी हैं। कुछ लोग दूध बिलौने के स्थान पर गोरैया पक्षी का घोंसला रखते हैं। उनका विश्वास है कि ऐसा करने से अधिक घी निकलता है। तीतर का बायें हाथ की तरफ बोलना, ग्वाले का भैंस पर चढ़े हुए मिलना, हिरन, तेली व काना व्यक्ति दिखलाई देना अपशकुन माने जाते हैं। कुछ लोग बुधवार व शनिवार को नया कार्य प्रारंभ करना उत्तम मानते हैं। इस प्रकार मेवात अंचल की सामाजिक परम्पराएँ तथा लोकविश्वास बड़े रंगीन व सुखद हैं। वस्तुतः मेवों की सामाजिक परम्पराएँ विशिष्ट होती हुई भी हिन्दू-परम्पराओं के प्रति आस्थावान हैं।

कृषि तथा पशु-पालन मेवों का मुख्य पेशा है। इसलिए मेवों की अधिकतर आबादी गाँवों में ही रहती है। यद्यपि कुछ शिक्षित लोग अब गाँवों को छोड़कर शहरों में बसने लगे हैं, मगर अधिकर मेव आज भी गाँव के सीधे-सादे शांतमय और मस्ती भरे जीवन को ही महत्त्व देते हैं।

मेवात अंचल के लोग विशेषतः मेव लोग कोठा, मेड़ी, चैबारा व हवेली आदि बनाकर रहते हैं। औरतें तथा बच्चे कोठों, मेड़ी या चैबारा आदि में रहते हैं। जबकि मर्द नौहरा में रहते हैं। नौहरा में ही इनके पशु बँधे होते हैं। 'गैत' में उपले (कंडे) तथा भूसा भरने के बाँगे बने होते हैं। कच्चे या पक्के कोठे पर सरकंडों व फूस की छान होती हे, जिसे ये लोग 'मेड़ी' कहते हैं। घर के ऊपर वाला पक्का कमरा 'चैबारा' कहलाता है। कच्चा छप्प कमरा जिस पर पूलों की छान हो तो उसे 'छप्पर' कहा जाता है। अनाज भरने के लिए घरों में कोठी या कुठले बने होते हैं जिन पर अधिकांश मेव औरतें काफी सुंदर ज्योमेट्रिकल चित्रकारी करती हैं। छीका लोहे के तारों, सण (जूट) का पतली रस्सी से बनाया जाता है, जो अक्सर छान या छत में लटका होता है। छींका विशेषतरू घी, छाछ, राबड़ी आदि रखने के काम आता है।

वस्त्राभूषण:

पुराने समय में मेव मर्द कुर्ता-धोती, फैंटा (पगड़ी), कमरी व सहरी पहनते थे। जिनका स्थान कमील-तहमद तथा बुराई-तहमद ने ले लिया है। पढ़े-लिखे युवक अब पैंट-बुशर्ट या कुर्ता-पजामा पहनने लगे हैं। मेव स्त्रियों का पुराना पहनावा अंगिया, कुर्ती, घाघड़ी, जौली, जमखी और लहासी व गदका होता था। वे वस्त्र रंगीन होते थे, जिन पर राजस्थानी अंदाज की कढ़ाई होती थी। अब इनका स्थान पहले कमीज पजामे (खूसनी) ने लिया था, मगर आजकल सलवार-कमीज तथा पंजाबी सूट ने इसका स्थान ले लिया है।

इस अंचल की औरतें आभूषण (जेवर) पहनने की बड़ी शौकीन होती हैं। चाँदी के आभूषणों में मुख्य रूप से हंसली, बाँकड़े,

www.ignited.in

हार, छण, पछेली, नेवरी, बला, गठिया, हथफूल, हमेल, झुमका, बाली, बटन तथा अंगूठी, चाँदी, गुलीबंद, कुंडल, चूड़ी तथा अंगूठी आदि सोने के मुख्य आभूषण होते हैं। कुछ समय पूर्व मेव मर्द भी सोने तथा चाँदी के जेवर पहनते थे। मेव मर्द कानों में सोने की मुर्की, गले में चाँदी की हंसली व तोड़ा, सोने चाँदी के बटन तथा हाथों में कड़े पहनते थे। आजकल मेव पुरुषों पर ये आभूषण नजर नहीं आते। हाँ, कुछ लोग सोने की चैन अवश्य पहनते हैं। मेव युवक विवाहोत्सव या मेलों के अवसर पर आँखों में स्याही या सुरमा तथा बालों में तेल डालते हैं। नीचा तहमद बाँधते हैं तथा अगली जेब में शीशा (दर्पण) तथा रुमाल रखते हैं। इन्हें स्थानीय भाषा में छैला (मनचला) कहा जाता है।4

खान-पान:

मेवों तथा अन्य जातियों का मुख्य भोजन घी, दूध, दही, माँस तथा रोटी है। माँस का प्रयोग मुख्यतः मेव लोग करते हैं। मेवात के खान-पान में मेहेरी (राबड़ी) बहुत मशहूर है। सबसे अच्छी मेहरी जो तथा छाछ की बनती है। मेहरी बाजरे की भी बनती है। मगर जौ की मेहरी की तो बात ही और हे। मेव सम्प्रदाय में विवाहोत्सव, अकीकों, फातिया तथा अन्य त्यौहारों के अवसर पर खीर, चावल, जर्दा, पुलाव आदि बनाया जाता है। मेहमानों के लिए बकरे या मुर्गे की दावत दी जाती है।

मेवात अंचल में अक्सर सामाजिक विवाह (Arrange Marriage) ही होते हैं। सबसे पहले पुत्री पक्ष के लोग अपनी लड़की के लिए वर तलाश करते हैं, जिसे 'छोरा देखना' कहा जाता है। लड़क पसंद आ जाने के पश्चात् सगाई (मंगनी) कर दी जाती है। विवाह की तिथि प्रायः एक या डेढ़ महीने पहले ही तय हो जाती है, जिसकी चिट्ठी वधू पक्ष की ओर से नाई या मीरासी लेकर जाते हैं। वर पक्ष के लोग अपनी बिरादरी की दावत करते हैं तथा पूरी बिरादरी के सामने चिट्ठी पढ़ाई जाती है जिसे 'ब्याह आना' कहते हैं। कुछ दिन बाद 'लगन' आता है। इसके पश्चात् पक्ष बकायदा विवाह की तैयारी शुरू कर देते हैं।

'लगन' के पश्चात् दूल्हा तथा दुल्हन के 'बनवारे' निकाले जाते हैं। चार सुहागन औरतें दूल्हा या दुल्हन को 'उबटन' लगाती हैं। उसे स्नान करवाती हैं तथा उसे अच्छा खाना खिलाया जाता है। दूल्हा पक्ष विवाह से एक दिन पहले पूरी बिरादरी की दावत करता है, जिसे 'मोढ़ा' कहा जाता है। इस अवसर पर लड्डू अथवा चावल बनाये जाते हैं। विवाह की पूर्व संध्या पर वर या मामा भात भरते हैं। विवाह की तारीख तय हो जाने बाद दस-पन्द्रह दिन पहले वर व वधू दोनों पक्षों की माताएँ गुड़ लेकर अपने-अपने मायके के विवाह का निमंत्रण देने जाती हैं जिसे 'भात नोतना' कहते हैं। इस अवसर पर बहन गाती हुई भैया से अच्छा भात भरने की विनती करती है। यथा-

बीरा अच्छो भरियो भात,

बाहण टोरा में।

थाली में एक हजार,

मुहुर लोटा में।

बीरा अच्छो भरियो भात,

बाहण टोटा में।।5

पहले बारात तीन दिन ठहरती थी, लेकिन आजकल यह रिवाज बदल गया है। आजकल बारात पाँच-छः घंटे ठहरती है। बारातियों की मौज, मस्ती के लिए नपीरी, अंग्रेजी बाजा, मीरासी या ढोला गाना तथा आतिशबाजी का आयोजन किया जाता है।

नवविवाहित दम्पत्ति के घर लडका होता है तो वर पक्ष के लोग सारी बिरादरी की दावत करते हैं, जिसे मेवाती में 'अकीका' कहा जाता है। मेव लोगों में जब कोई बुजुर्ग मरता है तो उसके उत्तराधिकारी (पुत्र) उसकी 'फातिया' करते हैं। इस अवसर पर बिरादरी को दावत दी जाती है।

दाम्पत्य जीवन:

मेवात अंचल का दाम्पत्य जीवन आनंद एवं उल्लासमय है। मेव स्त्रियों में अपने पति के प्रति प्रगाढ़ प्रेम होता है। मेव-स्त्री अपने पति के प्रति इतनी अनुरक्त एवं श्रद्धावान होती है कि उसकी ओर से निरन्तर स्निग्ध प्रेम की धारा बहती है। मेवात अंचल की मेवगी के प्रेमोद्गार निम्नलिखित लोकगीत की पंक्तियों में द्रष्टव्य हैं-

मेरो राजा जलेबी की टूक, मैं मिसरी की डली।

मेरो सैंया गयो परदेश, मैं चैबारे खड़ी।।6

अतिथि सत्कार:

मेवात अंचल के लोक जीवन में अतिथि सत्कार का विशेष महत्त्व है। यहाँ के लोग अतिथियों का भली-भाँति आदर करते हैं। यहाँ के लोग अतिथि सत्कार में परम औदार्य बरतते

हैं। एक मेव-स्त्री निम्नलिखित लोकगीत में अपनी अतिथि-सत्कार भावन का परिचय देती हुई कहती है-

चावल रांधू उजला, घुपवां घोंटू दा ल।

मीठो ले मनमावतों, दूँ छुटवां घी डाल।।7

संतानोत्पत्ति:

मेवात अंचल में मेव स्त्रियाँ ससुराल में ही संतान को जन्म देना उचित समझती हैं। मेवों में पुत्र का जन्म होना अधिक प्रसन्नता का अवसर माना जाता है। इस खुशी में बिरादरी को दावत दी जाती है जिसमें घी-बूरा व चावल खिलाये जाते हैं। छटी की रात को गुड़ व चने बाँटे जाते हैं। आजकल बताशे बाँटे जाते हैं। मेव लोग अपने नाथों के साथ खाँ व बक्श जोड़ने में गौरव समझते हैं। जैसे-रहीम खाँ, चाहत खाँ, अकबर खाँ, दिलावर खाँ, अहमद बख्श, महीन बख्श आदि। मेव स्त्रियों के नाम सीधे-सादे होते हैं। यथा-अंगूरी, अमीरी, मोहम्मदी, करीमी, लिछना, दाखां आदि।

लोक संगीत:

लोकसंगीत किसी भी संस्कृति का अभिन्न अंग होता है। मेवाती लोकगीतों का अपना अलग ही अंदाज है। अरावली पर्वत की शृंखलाओं में गूँजती हुई मेवाती स्त्रियों की आवाज तथा खेतों में ट्रैक्टर चलाते मेवाती पुरुष द्वारा गाई जाने वाली रतवाई, किसको मंत्रमुग्ध नहीं करती। मेवात में बिरहड़ा (दोहा) कहने की प्राचीन परम्परा है। मेवाती होली तथा मेवाती बारहमासी लोकगीतों का अलग ही स्थान है। शादी, विवाह, सुन्नत, अकीका, मेले, उर्स आदि अवसरों पर गाये जाने वाले गीत, मेवाती लोक संगीत की जान हैं। शास्त्रीय संगीत के क्षेत्र में मेवाती घराने का विशेष स्थान है। स्व. पंडित मणिराम मेवाती घराने के प्रसिद्ध गायक थे। इनकी पुत्री सुलक्षणा पंडित, बंबईया फिल्मों की प्रसिद्ध अभिनेत्री तथा मेवाती घराने की अच्छी गायिका है। विख्यात गायक पंडित जसराम मेवाती घराने के प्रसिद्ध गायक हैं। उनका प्रसिद्ध गीत 'अरे मेरो जोबन बीतो जाय' ठेठ मेवाती का लोकप्रिय गीत हैं। पं. जसराज के पुत्र शाहरंग फिल्मी संगीतकार हैं। वे अपनी संगीत कला से मेवाती घराने की प्रसिद्धि को चार चाँद लगा रहे हैं।

मेवाती लोक संगीत में सांग (लोकनाट्य) का अलग ही स्थान है। मेवाती सांगों की विशिष्टता यह है कि इसमें अभिनय, संवाद, संगीत, हास्य रसों का खूबसूरत सामंजस्य होता है। सांग मेवाती जनमानस के मनोरंजन का साधन ही नहीं बल्कि उनके सामाजिक जीवन की झलकी व लोक संस्कृति का परिचायक भी हैं। सांग, मेवात अंचल की धरोहर हैं, जो मेवाती लोकजीवन के जीवन मूल्यों, जीवन-पद्धतियों, परम्पराओं, सामाजिक मान्यताओं, लोकचरित्र का परिचय प्रस्तुत करते हैं। लैला-मजनू, हीर-रांझा, शशिबदनी-दरिया खाँ आदि इस अंचल के लोकप्रिय सांग हैं।

मेवाती लोक संगीत में 'ढोला' का विशेष महत्त्व है। इसमें सामान्यतः दो या तीन कलाकार ही कथा का प्रस्तुतिकरण करते हैं। इसमें बीच-बीच में लोकगीतों एवं हास्य का पुट कथा की रोचकता में चार चाँद लगा देते हैं। मेवाती संगीत-साजों में सारंगी, हारमोनियम, ढोल, भपंगा, अलगोजा, बाजा, बीन तथा नगारा बहुत ही प्रसिद्ध हैं। इन साजों में मीरासी सारंगी व ढोल, जोगी भपंगा तथा मेव अलगोजा, बाज तथा नगारा बजाने के शौकीन होते हैं।

मेवाती लोकगीत:

किसी भी समुदाय, गिरोह, कबीला अथवा जाति की पहचान उसकी भाषा और लोक साहित्य से होती है। मेवाती के विशेषज्ञ सिद्दिक अहमद मेव ने मेवाती लोकगीतों को बारह भागों में बांटा है। यथा -1. हमद और नात, 2. रतवाई, 3. चतुराई, 4. बरेहरियत, 5. रसिया, 6. बारहमासा, 7. मेवाती होली, 8. बरसी, 9. छूछक, भात, विदाई आदि के गीत, 10. कहमुकरा नियन, 12. फसल बोने व काटने के गीत। मेवाती लोकगीतों में रतवाई का बड़ा महत्त्व है। रतनाई+गजल की भाँति गाई जाती है। औरतें इसे मिलकर गाती हैं। मगर पुरुष अकेला भी गा लेता है। अपने पति से अगाध प्रेम, मेव औरतों की विशेषता है। इसी ओर संकेत कर रही हैं निम्न रतवाइयाँ-

ओंडी रोटी घी घणो

खाले-खाले मेरा नणदी का बीर,

तो मैं तो मेरो जी घणो।

ऊँचा कोठा घन चरे,

घन को तो मोड़ा मेरो बीर,

फोलादी के बल लड़े।8

विरहरियत गीत मुख्य रूप से विरह के गीत हैं जो प्रिय के बिछुड़ने की याद में गाये जाते हैं। जिस तरह अपने गिरोह से

www.ignited.in

बिछुड़कर माता हिरन रोती है, वैसा ही हाल विरहिणी मेवणी का है। पति अपनी पत्नी को इस तरह छोड़कर चले गये, जिस तरह बंजारा अपनी जलती हुई पूर (अलाव) छोड़कर चला जाता है। उसी अंदाज में मेवाती स्त्री कहती है-

हिरणी बिछड़ी डार सूँ, रोवे नैन बिछोड़।

बणजारा की पूर जू, की मोय गयो सिलगती छोड़।।9

रसिया प्रेम के गीत हैं जो मर्दों तथा स्त्रियाँ- दोनों गा सकते हैं। रसिया प्रेम भरे गीत हैं। जिन्हें मेवाती नौजवान बड़े शौक से गाना व सुनना पसंद करता है। प्रेमी पति रोजगार की तलाश में शहर जाने की तैयारी करती है। मगर प्रेरयसी पत्नी का दिल नहीं चाहता कि दिलों की दूरियाँ बढ़ें। वह अपने पति को रोकना चाहती है। यथा-

कलकत्ता तू मत जायो राजा, अकेली जान कैसे रहे।

सोने की थाली में, भोजन परोसा,

खावेगा मेर, मेरो राजा,

अकेली जान कैसे रहे।

कलकत्ता तू मत जायो राजा, अकेली जान कैसे रहे।10

मेवात अंचल में बारहमासी के गीत भी गाये जाते हैं। निम्न लोकगीत में सर्दी का वर्णन किया गया है, यथा-

जाड़ा तेरी रुत भली, भीतर सोणो होय।

जाड़ों भरे शरीर में, पिया गले लगावे मोय।।11

लोकगीतों में सावण का भी वर्णन हुआ है। यथा-

सावण आयो सायबा, या मन लिपटी नार।

खिलकत लिपटी बेलड़ी, पुरुषन लिपटी नार।।12

जोहड़ों की पालों (किनारे) पर, घर के आँगन, गैतों तथा नोहरों में नीम, पीपल, शीशम अथवा कीकर के पेड़ों पर झूले पड़ जाते हैं। मेवाती ललनाएँ मधुर स्वर में गाते हुए झूला झूलती हैं तथा पींग बढ़ाती हैं। एक-दूसरे से ऊँचा जाने की थाह और पेड़ों की ऊंची डालियों से पत्तियाँ तोड़ लाने की चेष्टा करती हैं तथा बाबुल से विनती करती हैं-

कच्चा नीम की निबोली, सावण जल्दी आयेगा।

बाबुल दूर मत दीजो, हमने कौण बुलाएगा।।

कच्चा नीम की निबोली, सावण जल्दी आयेगो।

नेटी मोटर की सवारी, तोहे झट बुला लूँगो।

तेरे भाई तो भुतेरा, बहती जोड़ खंदा दूँगो।।13

इस अंचल में सगाई के बाद 'ब्याह' आता है। नाई या मीरासी ब्याह (शादी) की चिट्ठी लेकर लड़का पक्ष के घर जाता है। बिरादरी के लोग इकट्ठे होते हैं और सबके सामने चिट्ठी पढ़ी जाती है। शादी की निश्चित तिथि से लगभग पन्द्रह दिन पहले तेल चढ़ाया जाता है और इसके पश्चात् शादी की औपचारिकताएँ पूरी की जाती हैं। मेव औरतें रात-भर बनवारे गाकर लड़का एवं लड़की के बनवारे निकालती हैं। बनवारे के गीत गाये जाते हैं। बड़ी-बूढ़ियाँ रतबाई गाकर इस उत्सव को उल्लासमय बना देती हैं। इस अवसर पर 'बटना' गीत भी बड़े उत्साह के साथ गाये जाते हैं। यथा-

आओरी सात जगी, तेल चढ़ाओ।

तेल चढ़ाओ थाके बटणा लगाओ।।

काइ को तेरो बटणो, काई को तेरो तेल।

जौ चण को वटणो, चमेली को तेल।।14

मेवात अंचल में 'भात' भरने का रिवाज भी है। जैसे ही भाई की बहन भाई के घर भात भरने पहुँचती है, बहन थाली में चावल व रुपिया डालकर गाते हुए भाई के सामने आती है और ज्यादा से ज्यादा दान माँगती है। यथा-

मैं तो हंसली-कठला पहन, खड़ी कोठा में,

बीरा अच्छो भरियो भात, बहण टोटा में।

थाली में डेढ़ हजार 'मुहुर' लोटा में,

बीरा अच्छो भरियो भात, बहण टोटा में।।20

लोक कला

मेवाती लोक संगीत/लोकगीत की तरह मेवाती शिल्पकला का अलग ही स्थान है। अलवर तथा इंदौर के किले, तिजारा एवं इंदौर की हबेलियाँ, फिरोजपुर, झिरका, बीवां, पिनंगवा, अलवर, इंदौर और तिजारा के मकबरे, शाह चोखा व शेख मूसा (पल्ला) की दरगाहें, कोटला, पहाड़ी एवं सोहना की मस्जिदें स्थापत्यकला की अनूठी मिसालें हैं। अलवर में

जहान खाँ का मकबरा, तो स्थापत्य कला की वह निशानी है, जो आज भी दर्शकों एवं इतिहासकारों को अपनी ओर आकर्षित करता है।21

बात-साहित्य: मेवात में बात-साहित्य का विशेष स्थान है। मेवात में बात (कथा) कहने तथा सुनने की विशेष परम्परा है। विवाह आदि उत्सवों पर मीरासियों द्वारा गाकर जब ये कथाएँ सुनाई जाती हैं तो, मेवाती दिला झूल उठता है। बात कहने के लिए आम तौर पर दो पात्र होते हैं। एक बात कहने वाला और एक हुंकार भरने वाला हो तो बात का मजा ही निराला होता है। एक ओर जहाँ बात कहने वाला अपने व्यक्तित्व, शैली एवं अनुभव से बात को दिलचस्प एवं प्रभावी बनाता है, वहीं दूसरी ओर हुंकार भरने वाला कहानी को गति और उत्साह प्रदान करता है। तभी तो कहा गया है-

'बात में हुंकारों, फौज में नगारों।' बात कहने वाला, बात में जान डालने के लिए अपनी ओजस्वी वाणी में जब दोहा गाता है तो उपस्थित जन-समूह वाह-वाह कर उठता है। जहाँ वीर रस के दोहे नौजवानों में जोश का संचार करते हैं, वहीं शृंगार रस के दोहे नौजवान दिलों की धड़कनें बढ़ा देते हैं। उपदेशात्मक एवं ज्ञान-ध्यान के दोहे संजीदा लोगों की खास पसंद होते हैं। मगर बात कहने वाला बीच-बीच में लोकगीत भी सुना दे तो महफिल का रंग ही जम जाता है। मनुष्यों के अलावा पशु-पक्षी, भूत-प्रेरत, राक्षस, दानव, जिन, परी आदि पर आधारित बातों का एक विशाल भंडार मेवाती बात-साहित्य में पाया जाता है। मेवात के ग्राम्य-जीवन से उठकर, राजा-महाराजाओं तथा बादशाहों के महलों तक और आकाश से लेकर पाताल तक कथाकारों की कल्पनाओं ने मेवाती बात-साहित्य को इतना दिलचस्प एवं मनोरंजक बना दिया है कि श्रोता मंत्रमुग्ध हो जाते हैं। 'चन्द्रावल गूजरी की बात', 'गादड़ा-गादड़ी की बात', 'दरिया खाँ शशिबदनी की बात', 'यासीन खाँ की बात' आदि बातें इस अंचल में बड़ी लोकप्रिय हैं।

लोक भाषा:

मेवात अंचल की भाषा 'मेवाती' कहलाती है। वास्तव में मेवाती, मुहावरे और लोकोकतियाँ प्रधान भाषा है, जिसमें हास्य का पुट भी पर्याप्त मात्रा में मिलता है। शक्ति को ही इज्जत सामने वाला मेव 'जाकी लाठी, वाकी पाटी' पर विश्वास करता है। वैसे भी मेवों के बारे में मशहूर है-'मेव, भरो जब जाणियो, जब तीजे हो जाये।' मेवों में जाकोजोर, वाको शोर कहावत में अटल विश्वास है। कई कहावतें मेवों की वीरता की अकावतें हैं, यथा- 'जंग में जाय, वही शूरमा कहाय'। मेवात अंचल में सैंकड़ों कहावतें प्रचलित हैं, जिनमें प्रमुख हैं-

'बगल मे छोरी, गली में ढुंडेरो', 'थाणा की गधी', 'भाई भावको, दुश्मन दावको', 'अपणो मारे छां में गेरे', 'पाँव की जूती', 'तीन-पाँच करना', 'तेल देखो, तेल की धार देखो', 'भाई सूँ बांह भारी', 'पोबारा पच्चीस, भैंस को फूफा', 'खेड़ा की दूब' आदि

मेवाती में मुहावरों का भी सटीक प्रयोग हुआ है। कतिपय उदाहरण द्रष्टव्य हैं- ऊत का ऊत, गधा की पाँच, दिन में तारा दीखणा, 'मूंछ मुंडाणा', 'नाक को बाल', 'जूत को यार', 'पीपल को भूत', 'कुत्ता-फतीजी' आदि।

मेवाती पहेलियाँ

'मेवाती' में पहेलियों को 'फाली आडणा' कहते हैं। पहेलियों में मेवात अंचल के सादा व ग्रामीण जीवन का चित्रण मिलता है। यथा-

1. तारा रोया रात कू, आँसू गिरा जमीन।

   रातू झेला दूबने, किरण ले गई छीन।। (ओस कण)

2. हरियल खेती, ज्ञाभण, गाय, जब जाणूं जब मुँह में आय। (फसल)

3. एक नार अजब हुडंदगी, आँधी टांग राखे नंगी।

   जो करे धोबन को काम, है वही या नारी को नाम।। (धोती)

4. ऊँचा खेड़ा हल चलै, हूँ पाणी की मूर्ख,

   चातर होय बता देय, बिन बक्कल को रुख।। (सिर के बाल)

5. एक बलेडो सहस घर, न्यारा न्यारा द्वार।

   याको अर्थ लगा जा, पाणी जब भर लायो नार।। (मधुमक्खी का छत्ता)

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि मेवात अंचल की सामाजिक परम्पराएँ बड़ी रंगीन एवं सुखद हैं। इन परम्पराओं में मेवों के भोलेपन एवं परम औदार्य का अनुमान सहज ही लगाया जा सकता है। वस्तुतः मेवों की सामाजिक परम्पराएँ विशिष्ट होती हुई भी हिन्दू-परम्पराओं के प्रति आस्थावान हैं। मेवात अंचल का लोक साहित्य इस अंचल के सुप्त मन को झंकृत करके उनमें नई उमंग, नया उत्साह तथा नई प्रेरणा जगाता हैं तथा उनके मन को रंगीन भावनाओं से भरता है।

www.ignited.in

संदर्भ

1. कृपाल चन्द्र यादव, हरियाणा शोध-पत्रिका (अगस्त, 1966 अंक-1), पृ. 79
2. सिद्दीक अहमद मेव, मेवाती संस्कृति, पृ. 12-13
3. वही, पृ. 13
4. वही, पृ. 29, 30
5. वही, पृ. 32-33
6. रामपत यादव, लोकांचल और साहित्यान्वेषण, पृ. 81
7. वही, पृ. 81
8. सिद्दीक अहमद मेव, मेवाती संस्कृति, पृ. 127
9. वही, पृ. 129
10. वही, पृ. 131
11. वही, पृ. 134
12. वही, पृ. 137
13. वही, पृ. 138
14. वही, पृ. 142
20. वही, पृ. 144
21. वही, पृ. 71

Corresponding Author

Nishim Nagar*

M.A. (Hindi) JRF, NET (Hindi) D.ed., Sirsa